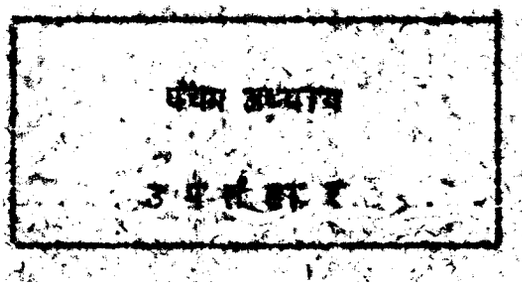

पंचम अध्याय

उपसंहार

हिंदी साहित्य की लोकप्रिय विधा "उपन्यास" है। अपने युग की अभिव्यक्ति उपन्यासोंमें पायी जाती है। हिंदी उपन्यास साहित्य की सरिता अनेक अपन्यासकारों के निरंतर प्रयाससे विकसित होती दृष्टिगोचर होती है। इस विकास में उत्तर प्रान्तिय उपन्यासकारों के साथ ही साथ श्री॰अनंत गोपाल शेवडे जैसे हिंदीत्तर भाषिक उपन्यास-कारोंका भी योगदान रहा है। अपने जीवन कालमें शेवडे ने १९३२ से लेकर १९७७ तक निरंतर लिखते रहे और कुल ११ उपन्यासों की रचना की। उनका समस्त उपन्यास साहित्य त्याग, संयम, समर्पण, सेवा, स्वत्व, समानता, मानवता, राष्ट्र प्रेम तथा सभ्यता के आदर्शों से प्रभावित हैं। इन आदर्शों के प्रति अटलनिष्ठा का भाव उनके जीवन का प्रकाशमान पक्ष है।

शेवडेजी ने अपने उपन्यासोंमें मानव को उसके समस्त गुण दोषों सहित चित्रित किया है। इससे पात्रों के मन के सुक्ष्मातिसुक्ष्म भावों का भी प्रदर्शन हो जाता है। इस प्रदर्शन में पात्रों के कुछ गहन तम और असामाजिक, कुंठित, दमित विषय वासनाओंका भी उद्घाटन हो गया है। परंतु शेवडे स्पष्ट गांधीवादी होने के कारण इन विषयों को नया परिवर्तित रूप दिया है। सेक्स को गांधीजीके पवित्र प्रकाशमें देखने का उनका प्रयास रहा है।

शेवडेने उपन्यासों के नारी जगत का भाव विश्व अत्यंत कोमलता से पेश किया है। नारी जीवन की विवशता,उनकी भावनाएँ उन्होंने

अत्यंत सुक्ष्मतासे चित्रित किया है। नारी जीवन की ओर उनका दृष्टिकोण हमेशा आदर युक्त रहा है। इन नायिकाओंके यौवन भावनाओं, मातृत्व भावनाओं का आंदोलन उस समय के उनके मनोद्वेगों को यथार्थता से चित्रित किया है । यौवन के प्रांगण में विहार करनेवाली नायिकाओंके मनमें उठनेवाली तरंगों को एक लहर के समानही शेवडेने सुक्ष्मतासे चित्रित किया है। अगर कही विषय वासनामें चूकभूल से गलती की गयी होतो उसका हृदय परिवर्तन व्दारा उसे सुधार दिया है।

उनके उपन्यासोमें आदर्श की स्थापना दिखाई देती है। "निशागीत" में सेवा का आदर्श, मृगजलमें कला का आदर्श, कोरा कागज में साहित्यिक धर्म का आदर्श, इंद्रधनुष में सुखी जीवन तथा आदर्श दम्पतिका आदर्श, अधूरा सपना तथा अमृत कुंभ में भारतीय संस्कृति का आदर्श, मंगला में संगीतकार का आदर्श इसप्रकार हर एक उपन्यासमें उन्होंने आदर्श की स्थापना प्रस्तुत की है। इसके अलावा प्रेम की उदारता, पाश्चात्य संस्कृति का बुरा परिणाम भारतीय संस्कृतिका आदर्श तथा मानव धर्म की स्थापना जैसे अनेक उद्देश्य दिखाई देते हैं।

शेवडे के उपन्यासो के नारी पात्रों को देखने के बाद हम यह कह सकते हैं कि नारी का बडाही मार्मिक तथा स्वाभाविक चित्रण हुआ है। नारी जीवन का बहु आयामी चित्रण शेवडे की अपनी एक विशेषता रही है। शेवडे ने नारी जीवन की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारीक, तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति और समस्याओं को सुक्ष्म दृष्टिसे देखकर स्त्री-पुरुष संबंधो की सुक्ष्मताओं को बडे ही कौशल के साथ अंकित किया है। उनकी नारी जो प्राचीन एवं आधुनिक संस्कारो के बीच पीस रही है। अपने संस्कारों के कारण वह अपनी सीमा लांघ सकने में खुद को असमर्थ

पाती है। यद्यपि कभी-कभी विद्रोह कर अपने सीमा वृत्त को तोड कर बाहर निकलती भी है तो उसका हृदय परिवर्तन करके उसे सही रास्तेपर लाने का कार्य उन्होंने सहजता से किया है। हर एक पाठक का इन नारी पात्रों से सहज लगाव हो जाता है। नारी समस्याओं की ओर नये अंदाजसे देखने के कारण नारी मन की मनोवैज्ञानिक गुत्थी को पूर्ण उन्मुकता तथा स्वच्छंदता से खोल सकने में पूरी तरह सफल हो गये है।

प्रस्तुत प्रबंध के आरंभ में मेरे सामने कुछ प्रश्न खडे थे, उनके निष्कर्ष निम्नलिखित है।

[१] शेवडे ने इन उपन्यासोमें कुछ नारियाँ आदर्श भारतीय परंपरा की राह पर चलती है जैसे नर्स सुशीला, मरियम, सुहासिनी आदि। लेकिन कही कही इस आदर्शवादीताकी कल्पनामें ये नारियाँ वास्तवता का साथ छोडती हुई दिखाई देती है। स्वयं दु:खों को सहती जाती है। शेवडे ने यह चित्रण करते वक्त मंगला, वीणा जैसे नारियों की विद्रोह भावना तथा उनकी आजादी का ऐलान तो किया किंतु अपने साहित्य का बुरा असर न पडे, लोक मंगल की भावना कायम रहे इसलिए इन नायिकाओं को हृदय परिवर्तन व्दारा उपर उठाया है।

[२] शेवडे के नारी पात्रों को देखने के बाद उनकी कुछ खास विशेषताएँ हमारे सामने आती है। उनके नारी पात्र विविधता तथा रोचकता से प्रस्तुत हुए हैं। उनके कुछ नारी-पात्र विद्रोही है, जो बंधी-बंधायी व्यवस्था, मर्यादा या धारणा को तोडने के लिए प्रस्तुत होती है। ये नारी पात्र मानसिक व्दंव्द से ग्रस्त दिखाई देते है। उनके नारी-पात्रों में भारतीय परंपरा का पालन, त्याग, मातृत्व की इच्छा सेक्स,

निस्वार्थ प्रेम, पुर्नजन्मपर विश्वास आदि विशेषताएँ दिखाई देती है।

[३] शेवडे नारी के प्रति अपना विशेष दृष्टिकोण रखते हैं। उनका यह दृष्टिकोण केवल सहानुभूतिशील न होकर संवेदनशील, परिस्कृत, उदार एवं प्रगतिवादी भी है। शेवडे नारी को एक श्रध्दामयी, प्रेरणादायी देवी के रूपमें देखते हैं। श्रध्दा के कारण मनुष्य के जीवन को अर्थ प्राप्त होता है और इसी श्रध्दा से संस्कृति का सृजन होता है। इस प्रकार नारी विषयक दृष्टिकोण शेवडे के उपन्यासों में मिलता है।

शेवडे के नारी-पात्रों का मैंने अनुसंधानात्मक अध्ययन इस लघु शोध प्रबंध में किया है। उनके उपन्यासों एवं साहित्य पर और भी अध्ययन हो सकता है। जैसे

१] "शेवडे के उपन्यासोमें चित्रित नारी-पात्रों की समस्याएँ।"
२] "शेवडे के उपर गांधीवाद का प्रभाव।"
३] "शेवडे के उपन्यासोंपर गांधीवादी दर्शन का प्रभाव।" आदि।

"आधार ग्रंथ सूची।"

"संदर्भ ग्रंथ सूची।"

KHARDEKAR LIBRARY
UNIVERSITY, KOLHAPUR

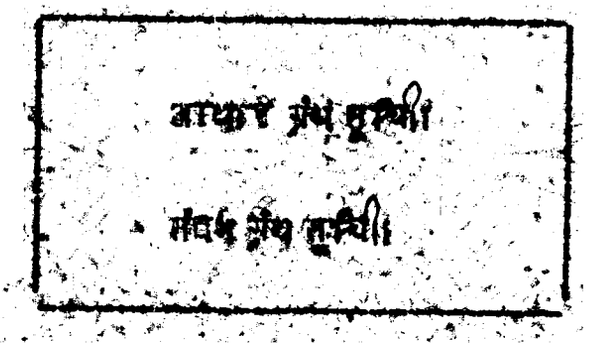
आधार ग्रंथ सूची
संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ सूची

अनंत गोपाल शेवड़े के उपन्यास

उपन्यास का नाम १.	रचना काल २.	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण ३.
१] ईसाई बाला	१९३२	चाँद प्रेस इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-१९३२ ई।
२] निशागीत	१९४८	"रंजन प्रकाशन" वकि विलास, सिटी स्टेशन मार्ग आगरा, संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण १९८१ ई।
३] मृगजल	१९४९	आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ६, दूसरा संस्करण १९६२ ई।
४] पूर्णिमा	१९५०	साहित्य रत्नाकर ग्वालियर।
५] ज्वालामुखी	१९५६	नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद। नवीन संस्करण- सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।
६] मंगला	१९५८	विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी तृतीय संस्करण १९८६ ई।
७] भग्नमंदिर	१९६०	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
८] अधूरा सपना	१९६०	हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
९] इंद्रधनुष	१९६५	वोरा ॲन्ड कंपनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद - १, द्वितीय संस्करण १९६९ ई।
१०] कोरा कागज	१९७३	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली पहला संस्करण १९७१ ई।
११] अमृतकुम्भ	१९७७	आलेख प्रकाशन, वी ८, नवीन शाहदरा, दिल्ली संस्करण १९८४ ई।

संदर्भ ग्रंथ सूची

लेखक का नाम	कृति का नाम	प्रकाशन और प्रयुक्त संस्करण
१] संम्पादक बाँकेविहारी भटनागर	"शेवडे-व्यक्तित्व, विचार और कृति।"	आत्माराम अॅन्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६, प्रथम संस्करण १९६६।
२] डॉ॰ शंकर नागेश गुंजीकर	"अनंत गोपाल शेवडे और उनका साहित्य।"	विद्याविहार, १०६/१५४, गाँधीनगर, कानपुर प्रथम संस्करण १९८६।
३] डॉ॰ सुनीलकुमार लवटे	"शेवडे-व्यक्तित्व एवं कृतित्व।"	अजब पुस्तकालय कोल्हापुर प्रथम संस्करण १९८६।